ISSN 2349 - 1353

ARTS & EDUCATION
INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL

Biannual Referred Journal
SE Impact Factor 2.58

VOLUME 7

ISSUE 1 (2020)

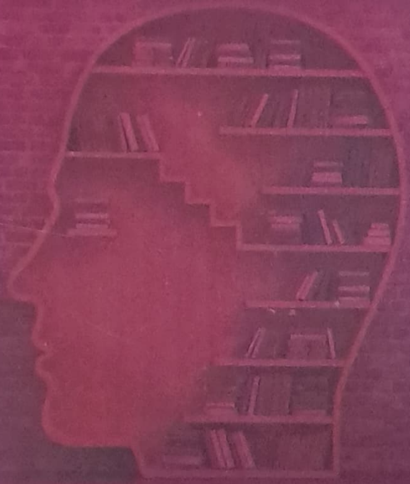

imrfjournals.in
Biannual Journal
Peer Refereed Journal
Open Access - Print & Online

Editors
Dr.Ratnakar D B
Dr.Jagmohan Bajaj
Dr.Mannepalli Gundala

IMRF JOURNALS

ISSN 2349 - 1353

ARTS & EDUCATION
INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL

Biannual Referred Journal
SE Impact Factor 2.58

VOLUME 7 ISSUE 1 (2020)

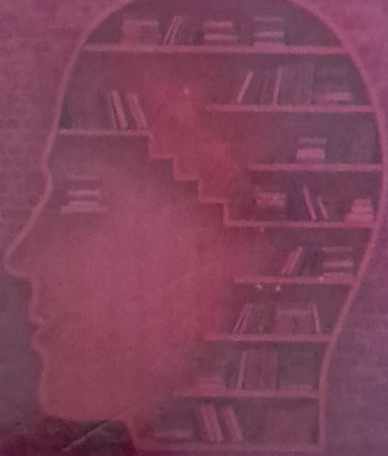

imrfjournals.in
Biannual Journal
Peer Refereed Journal
Open Access - Print & Online

Editors
Dr.Ratnakar D B
Dr.Jagmohan Bajaj
Dr.Mannepalli Gundala

IMRF JOURNALS

ARTS & EDUCATION

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL

BIANNUAL JOURNAL OF INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY RESEARCH FOUNDATION
FOR RATNAPRASAD MULTIDISCIPLINARY RESEARCH & EDUCATIONAL SOCIETY (REGD)

ISSN 2349-1353

Volume 7 Issue 1
2020

Editors
Dr. Ratnakar D B
Dr. Jagmohan Bajaj
Dr.Mannepali Gundala

CHOOSE TO BE HUGE

IMRF International Journals
INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY RESEARCH FOUNDATION
RATNA PRASAD MULTIDISCIPLINARY RESEARCH & EDUCATIONAL SOCIETY ANDHRA PRADESH, INDIA

मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में स्त्री विमर्श

मद्दाला जयलक्ष्मी

उच्च शिक्षा और शोध संस्थान
दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा
विजयवाडा, आंध्र प्रदेश

Received: Jan. 2020 Accepted: Feb. 2020 Published: Feb. 2020

महिला लेखन के क्षेत्र में मैत्रेयी पुष्पा का नाम अत्यंत महत्वपूर्ण है। मैत्रेयी पुष्पा के सम्पूर्ण साहित्य में स्त्री केन्द्र में दिखाई देती है। वे नारी स्वतंत्रता की पक्षधर हैं। उन्होंने ग्रामीण समाज की नारी की सामाजिक स्थिति, वातावरण और उसकी समस्याओं से ही अवगत नहीं कराया बल्फि वे उन स्त्रियों की समस्याओं को सुलझाने में भी बल देती हैं। मैत्रेयी पुष्पा ने नारी शक्ति के नए आयाम को खोजने का प्रयास किया है। अपने एक साक्षात्कार में वे कहती हैं– ''उस पुरुष व्यवस्था से मुझे चिढ है जो स्त्री के चारों ओर बंधन डालती है। हजारों वर्षों से ज्यादा समय से देशी विदेशी आक्रमण की सीधी मार या सच कहूँ, तो दोहरी मार स्त्री पर पड़ती है। आक्रमणकारियों के अत्याचार, बलात्कार और उनके हरम की सजावट का समान। उधर घर में पुरुष का आहत अहं और सुरक्षा की घेराबंदी।''[1] अपने पूरे साहित्य में मैत्रेयी पुष्पा ने नारी दशा पर प्रकाश डाला है।

एक स्त्री से अपेक्षा की जाती है कि वह स्वत्वहीन अस्मिता, भोग विलास, शोषण दमन की वस्तु बनकर रहे, तभी वह संस्कार शील स्त्री मानी जाएगी, इसी कारण स्त्री को घरों, परिवारों, सार्वजनिक क्षेत्रों में बोलने की आज्ञा नहीं है। पित्रृसत्तात्मक समाज का खोखला अहंकार ही है कि स्त्री को दबाकर, कुचलकर निम्न स्थान में रखो तथा उस पर नियंत्रण बनाकर रखो। इस नियंत्रण में रखने वाले पुरुष समाज की सोच में मूल चिंता यही रहती है कि औरत कहीं आजाद हो गई तो उसके हाथों से निकल जाएगी। स्त्री द्वारा अपनी स्वतंत्रता के लिए बगावत की आवाज को उठाते हुए हम मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में पाते हैं। घर की चारदीवारी की सीमाओं को लांघने का साहस 'चाक' उपन्यास की नायिका सारंग में पाते हैं। 'चाक' में सारंग का पति रंजीत भी उससे समाज व घर की चारदीवारी में रहने की इच्छा व्यक्त करता है। वह सारंग को समझाते हुए कहता है, ''औरतों जैसे आचरण करो। अपनी सीमाएँ देखो–गहने, कपड़े माँगों। पीहर प्यौसर जाने के लिए लड़ो–रूठो सच मैं तुम्हारी इस तरह की हर एक बात पर निछावर हो जाऊँगा तुमको कंचन की तरह अपने घर की हदों में सुरक्षित रखने वाला मैं, चौखट के बाहर का

खतरनाक दायरा कैसे नापने दूँ ?''[2] इससे स्पष्ट हो जाता है कि रंजीत को सारंग से कोई शिकायत नहीं है, बल्कि सारंग की स्वतंत्रता उसे सहनीय नहीं है।

स्त्री अस्तित्व एक जानवर की तरह माना गया है। 'चाक' उपन्यास में बिसुनदेवा के गुरू उससे गुलकंदी को स्वीकारने के लिए कहते हैं– ''अब इस छोरी ने तुझसे व्याह किया है तो यह भी तेरी बिरादरी में आ गई। औरत की वैसे कोई जाति नहीं मानी गई। वह तो जिससे व्याह कर ले उसी जाति की हो जाती है।''[3] हमारे समाज में स्त्री की स्थिति घर की चारदीवारी में कैद जानवरों से अधिक नहीं है जो अपने मालिक का हुकुम बजाते हैं, उनके लिए दिन–रात काम करते हैं और साथ–साथ अपने मालिक की प्रताड़ना झेलते हैं। उपन्यास का श्रीधर भी यही मानता है, ''कि जानवरों के बाद अगर किसी को खूंटे से बाँधा जाता है तो वे हैं आँगन लीपती, घर सहेजती, खेतों में काम करती औरतें।''[4] अनुकूल परिस्थिति हो या प्रतिकूल, स्त्री की मानसिकता ही गुलाम की भांति बना दी गई है। यदि वह कुछ जागृत होने का प्रयास करती है तो उसे कुचल दिया जाता है। अधिकांश मामलों में स्त्री इसे अपनी नियति समझकर स्वीकार कर लेती है।

वास्तव में पुरुष समाज की विभिन्न भूमिकाओं को न निभाने पर औरत का अस्तित्व खतरे में पड़ जाता है। 'चाक' उपन्यास में पुरुष द्वारा बनाई गई लक्ष्मण रेखाओं को लांघकर जब गुलकन्दी अपनी मर्जी से विवाह कर लेती है तो उसे उसका प्रायश्चित अपनी जान गंवाकर करना पड़ता है। केवल सारंग ही ऐसी स्त्री है जो घर के बंधनों को ढीला कर, पुरुष की अधीनता को अस्वीकार करने में सफल हो पाती है। सारंग उन पत्नियों में से है जो यह समझ जाती है कि उसका पति एक साधारण व्यक्ति है, वह उच्च महान व्यक्ति नहीं है, अतः वह उसके अधीन नहीं रहना चाहती।

घर के दायरों को लांघकर औरत की स्वतंत्रता सत्ता पुरुष की आंखों की किरकिरी बन जाती है और वह स्त्री को अपना प्रतियोगी समझने लगता है। ऐसी ही स्थिति तब होती है जब सारंग भी चुनाव में पर्चा भरने जाती है और उसका पति रंजीत उसे अपने बराबर का होना स्वीकार नहीं कर पाता और पर्चा नहीं भरता क्योंकि वह अपने को अपनी पत्नी के समकक्ष नहीं देखना चाहता। उसके साथी रंजीत का मजाक उड़ाते हुए कहते हैं, ''रंजीत तुम ऐसा करो, ये मूँछे मुंडवा डालो...अपनी लुगाई को बस में न कर सके।''[5] रंजीत सारंग

को रोकने के लिए उस पर बंदूक भी उठाता है। ऐसी विपरीत परिस्थितियों में भी सारंग हिम्मत का परिचय देती है और बंदूक छीन लेती है। वह स्वयं को रंजीत व उसके समाज के समक्ष घर की वेड़ियों को तोड़कर स्वतंत्र व्यक्तित्व के रूप में सामने आती है।

मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास 'आंगनपांखी' में भी स्त्री को घर के अन्दर नियंत्रित किया जाता है। बचपन से ही उसे सांचों में ढाला जाता है। उपन्यास की नायिका भुवन का विवाह एक अर्द्धविक्षिप्त लड़के कुंवर विजय सिंह के साथ हो जाता है और वह छोटे से घर से निकलकर बड़े किले में कैद हो जाती है जहां उसके मन की स्थिति को जानने वाला कोई नहीं है। भुवन को अब इस बात का एहसास होता है कि मायका उसका घर नहीं है वास्तविकता यह है कि उसका कोई घर नहीं है और अपने किले के समान जेल जैसी ससुराल से निकलने का रास्ता उसको स्वयं ढूँढना है, यहां यह भी प्रदर्शित होता है कि नारी की मानसिकता में सुख की परिभाषा गहने, कपड़े और आराम ही है। तसलीमा नसरीन इस परिप्रेक्ष्य में कहती हैं, "वे तुम्हें चारदीवारी में चुन देंगे सोने की जंजीर देगा। पालतू तोते को पिंजड़े में जिस प्रकार दाना दिया जाता है। उसी तरह दाना देंगे। अगर तुम मनुष्य हो तो एक जंजीर तोड़कर खड़ी हो जाओ।"[6] भुवन अपने रास्ते स्वयं चुनती है।

निष्कर्षतः मैत्रेयी पुष्पा ने समाज में स्त्री की स्थिति को बहुत ही संवेदनशीलता के साथ प्रस्तुत किया है। मैत्रेयी पुष्पा की उपन्यासों में स्त्री ग्रामीण परिवेश में सामंती अत्याचारों के विरूद्ध अपने लोकतांत्रिक जीवन की आकांक्षाओं की लड़ाई लड़ती है। वह धार्मिक रस्मों रिवाजों के नाम पर पुरुष की राजनीति से भली भाँति अवगत हो गई है। उसे न केवल पुरुष के विरूद्ध बल्कि सामाजिक, धार्मिक नियमों को भी चुनौती देनी पड़ती है। पुरुष ने स्त्री को प्रारम्भ से सेक्स यानी यौन शुचिता के नाम से ही प्रतिबंधित किया हुआ है लेकिन मैत्रेयी की नायिका इस धारणा को चुनौती देती नजर आती हैं। वे यह दर्शाती हैं कि आज भी स्त्री पारंपरिक संस्कारों में जकड़ी हैं, परावलंबी है, आश्रित हैं और अभी भी अर्द्ध–सामंतीय संरचना के रहने के कारण स्त्री का दमन भयानक रूपों में हो रहा है। आज आवश्यकता है इन स्त्री विरोधी हिंसक अमानवीय उत्पीड़क प्रभुत्वशाली परंपराओं का विश्लेषण करने की जिस आज तक बुद्धिजीवी खामोश रहे हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में आज भी शिक्षा व जानकारी आने से स्त्रियों में अन्याय के प्रति जागृति आयी है। इस भाव को दिखाने के लिए मैत्रेयी पुष्पा ने सारंग नैनी, भुवन, गुलकन्दी, रेशम जैसे चरित्रों को दिखाया है। मैत्रेयी पुष्पा द्वारा सृजित ये स्त्रियां पूरे समाज, सामाजिक मान्यताएँ, रुढ़ियों, रीति–रिवाजों, वर्जनाएँ, नैतिकताओं के दोहरे मानदंडों के विरूद्ध खड़ी हो गयी हैं जिनके नाम से स्त्रियों को सदियों से शोषित किया गया है।

संदर्भ सूची

[1] हंस, अक्टूबर 2004, संपादक राजेन्द्र यादव, पृ. 173
[2] चाक, मैत्रेयी पुष्पा, पृ. 374
[3] चाक, मैत्रेयी पुष्पा, पृ. 265
[4] चाक, मैत्रेयी पुष्पा, पृ. 345
[5] चाक, मैत्रेयी पुष्पा, पृ. 434
[6] नष्ट लड़की नष्ट गद्य, तसलीमा नसरीन, पृ. 85

***